डा० लीना कुमारी
गेस्ट टीचर मैथिली
रविनारायण सिंह रामकुमार सिंह
महाविद्यालय 'सहरसा'

Scanned with CamScanner

मैथिली कथा-साहित्य

आधुनिक मैथिली साहित्यक रचनात्मक विधा सभ मे कथाक महत्वपूर्ण स्थान अछि। एकर एहि महत्वक कारण एकर सर्वग्राहीता अछि। साहित्यक समस्त विधा मे ई एहेन विधा अछि जे पाठकक चरम अनुरंजन करबाक संग-संग एक चिरंतन सत्यक उद्घाटन करबाक प्रयत्न सेहो करैत अछि। हमरा बुझने लोक कल्याण भावना एवं लोकरंजक तत्वक जतेक सुन्दर समन्वय एहि विधा मे दृष्टिगोचर होइछ, ततेक साहित्यक कोनो आन विधामे नहि भेटैछ।

आनो प्राचीन कालहि सँ कथा साहित्यक एकटा सुदृढ़ परम्परा अछि। वैदिक काल मे सँ हो लोक कैं धर्म एवं भक्ति दिस आकृष्ट करबाक हेतु अनेकानेक कथाक रचना होइत रहल। संस्कृत साहित्य मे कथा एवं आख्यायिकाक एकटा समृद्ध परम्परा अछि। पाश्चात्य साहित्य मे तँ कथा एकटा गद्य विधा अछि जाहि पर अंग्रेजी साहित्य कैं गर्व अछि। हडसन, वेल्स, सर ह्यू वॉल, आपडम हैलरी, सदृश अंग्रेजी विद्वान कथाक (Short story) स्वरूप एवं तत्व पर विशद विवेचना कएने छथि।

मैथिली कथा साहित्य विकासक गति संतोषप्रद अछि। नवीन युवक है एकमात्र अवदान अछि आ मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक एहि मे महत्वपूर्ण भूमिका अछि। एहि तथ्य पर प्रकाश दैत डॉ० जयकान्त मिश्र सेहो स्पष्ट कहैत छथि—

"The short story as a form of literature is perhaps the greatest single achievement of Maithili literature today. Though till 1925-1930 it made its appearance in the garb of Maithili journalism."

वास्तव मे मैथिली कथा साहित्यक विकसित रूप १९४७ ई० क पश्चात प्राप्त होइछ। ओहि सँ पूर्व जे मैथिली कथा देखैत छी, ओकर विकास संस्कृत भाषा मे लिखलक कथाक अनुवाद सँ भेल। चन्दा झाक पुरुष परीक्षाक, मित्रलाभ हितोपदेश, महाभारतक अनुशासन पर्व (१९०८) बाबू क्षेमधारी सिंहक शकुन्तला (१९१८) डॉ० उमेश मिश्रक नलोपाख्यान (१९१७) एवं गणनाथ झाक "आदिपर्व" आदि अनुवादक चर्चा एहि संदर्भ मे कएल जा सकैछ। एहि अनुदित कथा सभ

Q. विद्यापतिक युग मैथिली साहित्यक स्वर्णयुग कहल जाइछ। विवेचन करु।

Ans:- भारतक इतिहास मे मध्यकाल भारतीय सभ्यता संस्कृतिक हेतु संकटग्रस्त समय रहल। मुसलमानी शासनक भौतिक तथा प्रभाव सँ भारतक प्रायः प्रत्येक लोकक सभ्यता तथा संस्कृति अपन मूल रूप सँ पृथक होमए लागल। मुसलमान लोकनि अपन राजनैतिक राज्यहिंसाक विस्तार नहि करलक अपितु अपन भाषा-सभ्यता तथा संस्कृतिक प्रहार सँ भारतीय सांस्कृतिकगढ़ पर सेहो आघात करैत रहल।

मुसलमानी संस्कृतिक एहि आक्रमणक समय मे मिथिलाक मनीषी लोकनि अपन राजनैतिक अस्तित्व सँ अधिक चिन्ता अपन अपन सभ्यता संस्कृतिक करलनि। तत्कालिक परिस्थिति कें ध्यान मे राखि ओ लोकनि सामाजिकताक स्वरूप दृढ़ करबाक चेष्टा करए लागलाह। एहि प्रक्रिया मे कर्णाट वंशीय राजा लोकनिक प्रमुख स्थान रहल। कर्णाट राजवंशक अन्तर्गत मिथिला साहित्य, दर्शन कलादिकक क्षेत्र मे महिमा मण्डित रहल। डा० उपेन्द्र ठाकुर अपन पुस्तक History of Maithila मे एहि तथ्य पर प्रकाश दैत एना लिखैत छथि —

" More over his patronage of Scholars and Respect of Sanskrit learning and art revived once more the ancient glory of Mithila.

कर्णाट वंशक समाप्तिक तीस वर्षक पश्चात् ओइनिवार राजवंशक उदय भेल। एहि तीस वर्षक अन्तराल मे ओइनिवार राजवंशक भावतरंगिनी सरिताक तरंग - कर्णाटवंश कालीन, साहित्य तथा कलाक भावतरंगिनी सरिताक तरंग - वलि गतिहीन नहि भेल, आ ओइनिवार राजवंशक दरबार सँ सेहो साहित्य - कलाक पूर्ण प्रसार

मुदा एकटा तथ्य जे स्पष्ट अछि, ओ अछि जे तत्कालीन समाजिक रीति-निति, आचार, विचार, धर्म, कर्म, साहित्य, कलादिक रचनाक माध्यम संस्कृत छल।

महाकवि विद्यापति एहि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति मे अवतरित भेलाह। ई संस्कृत भाषाक अजेय गढ़क समक्ष अपन प्रतिभा एवं साधना सँ जे लोक भाषाक काव्य वाटिका सजौलनि ओकर सौन्दर्य सँ जन-जन अनुप्राणित भेल। यद्यपि ओहि समय मे लोकभाषा मे साहित्यिक रचना करब कुत्सा साहित्य [illegible] छल। एहि सँ उपहासक संभावना छल। मुदा एहि संभावना सँ बचवाक हेतु आपन गर्वोक्ति कवच आपन कृति कीर्तिलता मे प्रस्तुत कएलन्हि—

बालचन्द्र विज्जावई भासा, दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ।

विद्यापतिक युग मे हवा छलाह आ लोक आशावादक प्रक्रिया के मांग संस्कृत भाषाके सीमित दायरा सँ बाहर गए स्पष्ट कहलन्हि—

सक्कय वाणी बहुअण भावइ
...
देसिल बअना सब जन मिट्ठा
तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा॥

लोकभाषाक उन्नायक महाकवि विद्यापति साहित्य मे ई बूझल जे ओ संस्कृत सहित आन भाषाक अधिकारी छलाह — सर्वप्रथम आमक भाषाक [illegible] होपन। भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा, शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, विभागसार, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, मणिमंजरी, लिखनावली, गयापत्तलक, वर्षकृत्य, व्याडिभक्ति तरंगिणी, प्रभृति संस्कृत कृति मे हुनक संस्कृत भाषा ज्ञानक [illegible] एहि [illegible]
प्राकृत संस्कृत आदि [illegible] एहि [illegible]

Scanned with CamScanner

मे मैथिली कथा साहित्यक उदय [illegible] प्रारम्भ [illegible] मुदा एहि दिशामे [illegible] प्राय: नहि [illegible]। अनुवादक [illegible] मे [illegible] "मैनडुल" [illegible] मिश्रक [illegible], [illegible] "[illegible]" [illegible] जीवन प्रभृति [illegible] विशेष [illegible] अछि। ई मैथिली कथा-साहित्यक प्रारम्भिक [illegible] मे [illegible] कथा [illegible] पर मौलिक [illegible] प्रशंसनीय अछि। एहि [illegible] 'पतिव्रता' [illegible] 'प्रसून [illegible]' [illegible] 'आदि अछि। एहि [illegible] प्रमुख [illegible] मे रमानन्द ठाकुरक [illegible] सार (१९३०) [illegible] प्रो० [illegible] अछि।

मैथिली कथा-साहित्यक प्रारम्भिक कालमे [illegible] कथा [illegible] कथामे संस्कृत साहित्यक [illegible] एवं [illegible] शैली [illegible] मौलिक [illegible]। एहि कथामे [illegible] [illegible] प्रशंसनीय अछि। एहि [illegible] प्रो० [illegible] '[illegible] कथा' प्रसिद्ध अछि। मुदा एहि कथा नहि [illegible] [illegible]। स्थान-स्थान पर [illegible] मौलिक [illegible] मे [illegible] अछि। एहि शैली [illegible] [illegible] प्रशंसनीय अछि।

मैथिली कथाक प्रारम्भिक विकासमे अंग्रेजी एवं बंगला कथाक अनुवाद [illegible] [illegible]। एहि क्रममे रमानन्द ठाकुर, [illegible] मैथिली [illegible] मिश्र इत्यादि [illegible] [illegible] प्रशंसनीय अनुवाद अछि। बंगला सँ मैथिलीमे अनुवादित [illegible] '[illegible]' [illegible] मिश्र द्वारा '[illegible]' [illegible] झा द्वारा '[illegible] जीवन' [illegible] अनुवाद अछि।

[illegible] परिवर्तनक [illegible] आधुनिककाल [illegible] कथा साहित्य यथार्थ दृष्टिक

जीवन' सभमे युवक समकालीन सम्पूर्ण समस्या, राजनीति, धर्म, समाज, आदि, [illegible] आधुनिक कथाक विशेषता थिक। ई सभ मिलि मैथिली कथा साहित्यक विकासक पथ पर [illegible] अछि। [illegible] लोकक आडम्बर, ग्राम-जीवन, नारी जातिक [illegible], [illegible], निर्धन लोकक आर्थिक जीवन दशा, [illegible], [illegible] प्राचीन एवं नवीन पीढ़ीक [illegible], [illegible] आदिकेँ [illegible] मे [illegible] मैथिली कथाकेँ [illegible] [illegible] मे पूर्ण सक्षम अछि।

आधुनिक कालक प्रमुख कथाकार

[illegible] मे प्रो० हरिमोहन झा (कन्यादान, एकादशी) डॉ० काञ्चीनाथ झा 'किरण' (वीर प्रसून, वीर [illegible]) [illegible] कुमार ([illegible]) [illegible] 'नारद' ([illegible]) मनमोहन झा ([illegible]) प्रो० [illegible] ([illegible]) [illegible] कुमार [illegible] ([illegible]) डॉ० [illegible] किशोर वर्मा '[illegible]' ([illegible]) डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा ([illegible]) [illegible] मिश्र 'अमर' ([illegible]), प्रो० [illegible] ([illegible]) श्री [illegible] झा ([illegible], एक [illegible]) स्व० राजकमल ([illegible]) [illegible] झा (एक [illegible]) रमानन्द रेणु ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] नाथ ठाकुर ([illegible], [illegible] प्रतिज्ञा) [illegible] ([illegible]) आदि प्रमुख अछि।

[illegible] कथा [illegible] उत्कृष्ट अछि। [illegible] डॉ० [illegible] मिश्र [illegible] मैथिली कथा साहित्यक [illegible] कहलनि —

"Maithili short story since independence has [illegible] a very great departure from the [illegible] is perhaps the most [illegible] cultivated in Maithili today. [illegible]

has not been achieved in the novel. It is far the glorious and unique type of writing."

वास्तव मे जीवनक कोनो एक पक्ष, एक घटना वा कोनो भाव विचारक अतेक मार्मिक, प्रभावपूर्ण चित्रण उपरोक्त कथाकार लोकनि कयने छथि। श्री मैथिली लघु कथाक स्वर्णिम युग के प्रतिष्ठित करने छथि। मैथिलीक लघुकथा जे अंग्रेजीक शॉर्ट स्टोरी सँ प्रभावित भए विकसित भेल, ओकर स्वरूप निर्धारणक श्रेय हुनके छन्हि। लघु कथाक विकास मे "मिहिर", "वैदेही", "मिथिला दर्पण", "मिथिला मिहिर" आदि पत्र पत्रिका के विशेष श्रेय जाइत छैक। वास्तव मे एहि पत्रिका सभ माध्यमे मैथिली लघुकथा अपन विकासशील रूप के प्रस्तुत करलक।

आधुनिक मैथिली - कथाक स्वरूप निर्दिष्ट करबा मे अग्रगण्य पं० श्यामानन्द झा, पं० लक्ष्मण झा, किरण जी प्रभृति कथाकारक कालोपयोगी कथा सभ नीर प्रसून, विशेषरूप सँ महत्वपूर्ण योगदान अछि।

1920 सँ 1930 ई० धरिक समय मैथिलीक आधुनिक कथाक स्वर्णिम काल रहल। प्रो० हरिमोहन झा, भुवन जी, अनुप रामेश्वर सिंह (आचार्य अमरेश), कुमार गंगानन्द सिंह (पचहरी) अपन-अपन कथाक संग प्रस्तुत भए मैथिली - कथा के आधुनिकतम शिल्प प्रदान करलनि। प्रो० हरि मोहन झा अपन लघु कथा संग्रह "प्रणम्य देवता" तथा "चरचरी" सँ मैथिली कथा - साहित्य के बड़ लोकप्रिय बनौलनि। वास्तव मे ई उपरोक्त दुनू कथा - संग्रहक द्वारा अपना के उपन्यास - कार सँ अधिक कथाकारक रूप मे प्रतिष्ठित करलनि। डॉ० श्री जयकान्त मिश्र एहि तथ्य पर प्रकाश दैत लिखैत छथि -

"Harimohan Jha is the popular author of the novel "Kanyadana" and the impression of his first collection of stories Pranamya Devata the continued in later collections ... to be even more successful as a short story writer than as a novelist."

वास्तव मे हरिमोहन बाबूक कथा मैथिली कथा - साहित्य मे क्रान्ति उपस्थित कए देलक। श्रृंगार एवं करुणा रस लोक सभ ओकर स्थान लोकक हास्य एवं व्यंग्य, हिनक कथा मे मौलिक पहिल बेर आत्मनिरीक्षण करलनि। एकर लोकप्रियताक कारण हिनक सरल भाषा तथा अकृत्रिम शैली रहल।

हिनकर प्रकारक कथाकार लोकनि प्रवृति सूचक नहि व्यक्तिमूलक भए गेलाह। वैयक्तिक जीवनक कोनो कोनो घटनाक रहेन भावुक एवं मार्मिक चित्रण करब एहि कथाकार लोकनिक उद्देश्य रहल जे हृदय के अभिभूत कए दिअए।

श्री योगेन्द्र चौधरी, अमर जी, प्रो० मायानन्द मिश्र, ललित, राजकमल, प्रो० रामदेव झा, मायानन्द, शेखर, किरण जी प्रभृति कथाकारक कथा सभ अनेक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। विषयक विविधता सँ लए के कथाकलाक आधुनिकतम टेकनिकक दृष्टिएँ ई काल सर्वाधिक विकसित काल थिक। निम्न मध्य वर्गीय परिवारक चित्रण सँ लए के मनोवैज्ञानिक प्रकृतिक प्रयोगक दृष्टिएँ एहि कालक कथा सभक विशिष्ट स्थान अछि। आधुनिक कथाक मूल तत्व अछि समाजवादी एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण। मार्क्सवादी फ्रायड आधुनिक प्रयोगवादी रचनाकारक प्रेरणा स्रोत थिक। उगल - भरल व्यक्ति के देखि जाए हुनक मोन गद्गद् भए जाइत अछि। प्रेमिका प्रति हृदय मे सहृदयताक भाव अछि, अनन्त अभाव अल्प अभिश्राप जीवन मे दुर्व्यवस्थाक कारण रूप प्रकाश भए जाइत। इएह कारण अछि जे आधुनिक कथा मे संवेदनाक स्वरेश मुखरित नहि अछि, बौद्धिकता आयल अछि।

उपरोक्त कथाकार सभ मे मायानन्द मिश्र अवचेतन मोन मे चालि रहल द्वन्द्वक विश्लेषण अपूर्व कौशलक संग करने छथि। ललितक समाजवादी यथार्थवाद तथा मायानन्द मिश्रक अवचेतनाक यथार्थवादक समन्वित स्वरूप भेटैत, राजकमलक कथा मे। सामन्तवादी शोषण, रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्थाक बीभत्स परिणाम, बाल - विवाह, बेमेल विवाहक भयंकर परिणाम हिनक कथा मे सजीवताक संग अभिव्यक्त अछि।

राजकमलक कथाक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक ई कथन द्रष्टव्य अछि —

"Rajkamal was really a very great writer who died before he could fulfil himself. But even as such there are very few who could equal his acute observation, unique power of grasping the storyness of a situation."

1960 ई० सँ प्रगतिशील कथाकार मे श्री जीवकान्त, धूमकेतु, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन, राजमोहन झा, सुभाष चन्द्र यादव, धीरेन्द्र, महाप्रकाश, ललितेश, मधुकर गंगाधर, मार्कण्डेय प्रवासी, साकेतानन्द प्रभृति कथाकारक कथा मे मैथिली-कथा साहित्यक युगीन विकास सुनिश्चित अछि। एहि मे जीवकान्त सँ एकटा नव युगक प्रारम्भ होइछ। डॉ० जयकान्त मिश्र अपन पुस्तक 'History of Maithili Literature' मे स्पष्ट लिखने छथि —

'After Harimohan babu the next trend that has been taking a shape in modern Maithili story writing has reached its acme in the work of Jivkant'

मैथिली-कथाक विकास मे महिला कथाकारक योगदान सेहो कम नहि। श्रीमति कामख्या देवी, श्रीमती शेफालिका वर्मा, नीरजा रेणु, श्रीमती नीता झा, श्रीमती उषा किरण खाँ क कथा सभ मे नारी जीवनक मार्मिक पक्ष कें उद्घाटित कएल गेल अछि। हिनका लोकनिक कथा मे कथाकलाक सुन्दर संयोजन सेहो अछि।

स्पष्ट अछि जे मैथिली-कथा-साहित्यक विकास संतोषप्रद अछि। साहित्यक एहि सर्वाधिक लोकप्रिय विधाक रूप-निखारबा मे मैथिलीक कथाकार पूर्ण सक्षम भेल छथि।